ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):337-347

संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड . प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

पवन कुमार दुबे एवं विकास कुमार सिंह
शिक्षक-शिक्षा विभाग
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
कोटवा-जमुनीपुर दुबावल प्रयागराज (उ०प्र०)

Received: 30.11.2024 Revised:02.02.2025 Accepted: 06.04.2025

सारांश

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, - शैक्षिक ढाँचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति था। अतः उस समय शिक्षक की भूमिका ईश्वर के रूप में थी। शिक्षक मोक्ष मार्ग का दाता तथा शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग थी।वेदों और पुराणों की प्राचीन शिक्षाओं में निहित, भारतीय शिक्षा प्रणाली पुराने स्कूल गुरुकुलों से एक लंबा सफर तय कर चुकी है नए जमाने के हाई-टेक शैक्षणिक संस्थानों के लिए। हालांकि भारत के संविधान ने मुख्य रूप से राज्य को देश के शैक्षिक तंत्र का अधिकार दिया, 1976में एक संवैधानिक संशोधन की शुरूआत ने स्कूली शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों के सुझाव के लिए राष्ट्रीय सरकार की भूमिका को जोड़ा, जिसमें राज्य के पास अभी भी कुछ स्वतंत्रता थी। कार्यक्रमों का कार्यान्वयन। देश की स्कूल प्रणाली में कुल चार स्तर हैं, यानी निम्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च और उच्चतर माध्यमिक। हालांकि शिक्षा प्रणाली को अभी भी विभिन्न तरीकों से सुधारा जा सकता है पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में काफी बदलाव आया है। प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ , दुनिया एक छोटी जगह बन गई है, जिससे संचार आसान हो गया है और सभी के लिए शिक्षा के अवसर खुल गए हैं। इंटरनेट ने दुनिया और हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। यह बदलाव सीखने के विभिन्न तरीकों में भी देखा जा सकता है। दूरस्थ शिक्षा सीखने की दुनिया में नवीनतम चर्चा है। इसने छात्रों को ऑनलाइन व्याख्यान और

स्व-अध्ययन के माध्यम से पेशेवर कौशल और दक्षता विकसित करने का अवसर प्रदान किया है। दूरस्थ शिक्षा ने माउस के एक क्लिक से शिक्षा उपलब्ध करा दी है।

***मुख्य शब्द** -संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा ,बी.एड .प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति ,मध्यमान,मानक विचलन ,क्रान्तिक निष्पत्ति इत्यादि।*

प्रस्तावना-

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से अभिप्राय शिक्षण कार्य और शिक्षण सिद्धांत तथा उसकी विधियों के अभिविन्यास में अभिरुचि से है। शिक्षण एक कला है जिसमें उसकी प्रतिभा और सृजन की झलक मिलती है। शिक्षण एक कार्य प्रणाली है जो सामाजिक और भौतिक वातावरण के अनुकूल प्रशिक्षु को अपने ज्ञान से सृजित करता है। शिक्षक छात्रों की ज्ञानात्मक , भावनात्मक तथा क्रियात्मक योग्यताओं का विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जैसे जैसे विद्यार्थी नवीन तथ्यों के बारे में सीखते जाते हैं , उनमें ज्ञान का विस्तार होता है , साथ ही समुचितभावनाओं , विचारों और अभिवृत्तियों को वे ग्रहण करते हैं जो समाज स्वीकृत और अपेक्षित हों। अभिव्यक्ति , क्षमता के साथ ही कौशलात्मक विकास भी उनमें होता है। शारीरिक विकास और मानसिक अनुभवजन्य प्रगति एवं स्तरोन्नयन दोनों सम्पन्न होने के कारण शिक्षण को एक विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में मान्यता दी जाती है। इस कार्य हेतु ऐसे सफल शिक्षक की आवश्यकता होती है। सफल शिक्षण का कार्य एक सफल शिक्षक ही करा सकता है। जो अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति वाला हो और व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध हो।

अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय शिक्षा परंपरा में अंग्रेजों के आने के साथ ही सन 1793 से ही अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना प्रारंभ हो गई थी। परंतु उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था जिस कारण जो भी प्रशिक्षण संस्थान स्थापित की गई थी वह सब अंग्रेजी अर्थात ब्रिटिश शिक्षण पद्धति पर आधारित थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में 649 प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो चुके थे। प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात तेजी से विकास हुआ है। प्रशिक्षण संस्थानों की संख्यात्मक वृद्धि तीव्र गति से हुई परंतु इन संस्थानों में गुणात्मक वृद्धि की गति मंद पड़ती गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यू.जी.सी., एन.सी.ई.आर.टी., एन.सी.टी.ई, एस.सी.ई.आर.टी .जैसी अनेक संस्थानों की स्थापना की गई जिसके माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के गुणात्मक उन्नयन के लिए अनेक नियम एवं प्रावधान तैयार किए गए हैं। फिर भी प्रशिक्षण संस्थानों में गुणात्मक विकास को उच्च स्तर तक पहुंचाना संभव नहीं हो पाया है। बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में दुनिया भर के विकसित देशों ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास आरंभ किया। भारत में भी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को मान्यता प्राप्त हुई, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर एवं अन्य डिप्लोमा कोर्स के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स को भी मान्यता दे दिया गया है।

शिक्षा हमें अपने आसपास की दुनिया का ज्ञान देती है। यह इसे कुछ बेहतर में बदलने की हमारी क्षमता का निर्माण करता है। इसलिए, यदि कोई ऐसी चीज है जिसे आप आसानी से प्राप्त करना चाहेंगे, तो वह शिक्षा होगी। सीखने में लचीलापन तुलनात्मक रूप से एक नई अवधारणा है।अतीत में, लोग अक्सर अपने लिए एक पेशे का चयन करते थे और अपनी आजीविका चलाने के लिए अपने शेष जीवन के लिए इसे करते थे, लेकिन लोगों को नई परिस्थितियों के अनुकूल होना पड़ता है -यहाँ तक कि एक ही समय में दो काम भी करना पड़ता है। बदलते समय में लोगों को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के अनुकूल होने के लिए अधिक से अधिक नए कौशल विकसित करने की आवश्यकता होगी। लोगों को अपने कौशल के सेट में जोड़ना जारी रखना होगा। यह सिर्फ उनकी स्नातक की डिग्री के बारे में नहीं है। लोगों को नई चीजों के अनुकूल होना पड़ रहा है और नए कौशल सीखने पड़ रहे हैं। यह उस पूरे नए उन्नयन का एक हिस्सा है जिससे हम जीवन के सभी क्षेत्रों में गुजर रहे हैं। दुनिया वैसी नहीं है जैसी पारंपरिक शिक्षाविदों ने इसे आकार दिया है। लोगों को आधुनिक दुनिया के साथ तालमेल बिठाने के लिए नए कौशल को अपनाना पड़ रहा है और नई चीजें सीखनी पड़ रही हैं। यह विशेष रूप से हमारे लोगों के साथ बातचीत करने के तरीके और नई चीजें सीखने के तरीके में काफी बदलाव आया है। लोगों के कंफर्ट जोन बदल रहे हैं। अपग्रेड करने में विफल रहने से आप समय की लहर में वापस आ जाएंगे।

हाल की महामारी की स्थिति ने पूरी दुनिया को एक ठहराव में ला दिया था। सभी प्रकार के संस्थानों में सामान्य गतिविधियां हफ्तों तक ठप रहीं। इसमें अनिश्चित काल के लिए कक्षाएं बंद करने वाले शैक्षणिक और व्यावसायिक संस्थान भी शामिल थे। लेकिन ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की बदौलत शिक्षक अपने छात्रों के संपर्क में आ सके। दुनिया भर के सभी स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों ने एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर स्विच करके अपना पाठ जारी रखा। संस्थानों ने अपनाई ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियां; स्थापित शैक्षणिक संस्थान भी ऑनलाइन जारी हैं। विभिन्न अकादमियां ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की मदद से छात्रों को निर्देश दे रही हैं । यहां तक कि यूरोप और उत्तरी अमेरिका के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय भी कुछ समय से ऑनलाइन कार्यक्रम पेश कर रहे हैं। तो योग्य प्रशिक्षकों की उपलब्धता के साथ, प्रसिद्ध संस्थान ऑनलाइन कार्यक्रमों के सीखने के अनुभव को और एकीकृत कर सकते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन -सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धि उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध-प्रबन्धा एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को

पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया।

सिंह ,आलोक कुमार (2007) ने" -माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों एवं बी.एड, छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति एवं मूल्यों का उसके कक्षा शिक्षण व्यवसाय पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। "पर शोध कार्य किया।

जिससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गये-

1- प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति बी.एड, छात्राध्यापकों की तुलना में अधिक होती है।
2- उच्च शिक्षक अभिवृत्ति वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में अध्यापकवार्ता ,परोक्ष अध्यापकवार्ता ,प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता ,विषय वस्तु अनुपात ,तात्कालिक अध्यापक ,प्रश्न अनुपात तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया अनुपात कक्षा शिक्षण व्यवहार निम्न शैक्षिक अभिवृत्ति वाले प्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं।
3- उच्च शिक्षक अभिवृत्ति वाले बी.एड, छात्राध्यापकों में परोक्ष अध्यापकवार्ता ,प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता तथा तात्कालिक अध्यापक प्रश्न अनुपात ,कक्षा शिक्षण व्यवहार ,निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले बी.एड, छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं।
4- उच्च शिक्षक अभिवृत्ति वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में परोक्ष अध्यापकवार्ता ,प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता ,परोक्ष/प्रत्यक्ष व्यवहार अनुपात विभ्रान्ति या भ्रम प्रतिशत ,तात्कालिक अध्यापक प्रश्न अनुपात तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया अनुपात ,कक्षा शिक्षण व्यवहार उच्च अभिवृत्ति वाले बी.एड, छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं जबकि शेष कक्षा शिक्षण व्यवहार पर समानता होती है।
5- निम्न शिक्षक अभिवृत्ति वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में परोक्ष अध्यापकवार्ता ,प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता विभ्रान्ति या भ्रम प्रतिशत ,तात्कालिक अध्यापक प्रश्न अनुपात तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया अनुपात ,कक्षा शिक्षण व्यवहार निम्न शिक्षक अभिवृत्ति वाले बी.एड, छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं। जबकि शेष कक्षा शिक्षण व्यवहार पर समानता होती है।
6- उच्च अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में अध्यापकवार्ता ,परोक्ष अध्यापकवार्ता ,प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता विभ्रान्ति या भ्रम प्रतिशत ,विषय वस्तु अनुपात , तात्कालिक अध्यापक प्रश्न अनुपात तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया अनुपात ,कक्षा शिक्षा व्यवहार निम्न अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले प्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं ,जबकि शेष कक्षा शिक्षण व्यवहार पर समानता होती है।
7- उच्च शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले बी.एड, छात्राध्यापकों में तात्कालिक अध्यापक

प्रश्न अनुपात ,कक्षा शिक्षण व्यवहार को छोड़कर शेष सभी कक्षा शिक्षण व्यवहार निम्न शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले बी.एड ,छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं

8- उच्च शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में परोक्ष अध्यापकवार्ता , प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता ,विभ्रान्ति या भ्रम प्रतिशत ,तात्कालिक अध्यापक प्रश्न अनुपात तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया या अनुपात कक्षा शिक्षण व्यवहार ,उच्च शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले बी.एड, छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं ,जबकि शेष कक्षा शिक्षण व्यवहार पर समानता होती है।

9- निम्न शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले प्रशिक्षित अध्यापकों में छात्रावार्ता, परोक्ष/प्रत्यक्ष अध्यापकवार्ता, परोक्ष/प्रत्यक्ष व्यवहार अनुपात, विभ्रान्ति या भ्रम प्रतिशत तथा तात्कालिक अध्यापक अनुक्रिया अनुपात कक्षा शिक्षण व्यवहार निम्न शिक्षक अभिवृत्ति एवं मूल्य वाले बी.एड., छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं , जबकि शेष कक्षा शिक्षण व्यवहार पर समानता होती है।

श्रीवास्तव (2009) ने जौनपुर जनपद के कुल 50 माध्यमिक स्तर के अध्यापकों पर कार्य करते हुए यह निष्कर्ष प्राप्त किया था कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और कक्षा शिक्षण व्यवहार में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

यादव (2010) ने प्राथमिक स्तर के अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्च स्तर को कार्य संतुष्ट रखने वाले परिषदीय अध्यापक उच्च स्तर के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में भी पाए।

शुक्ला (2011) ने माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्यापन शैली में संबंध का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष प्राप्त किया था कि- "उच्च शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति वाले अध्यापकों में पाठ पढ़ाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।"

शोध अध्ययन के उद्देश्य-

1. संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाए-

1. संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के

प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या-:

जनसंख्या जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। प्रयागराज जनपद में स्थित संस्थागत प्रशिक्षण संस्थानों के 200 (जिसमें 100-100 क्रमशः पुरुष तथा महिला प्रशिक्षणार्थी) इसी प्रकार दूरस्थ प्रशिक्षण संस्थानों के 200 (जिसमे 100-100 क्रमशः पुरुष तथा महिलाप्रशिक्षणार्थी) न्यादर्श के रूप में लिए गये हैं।

न्यादर्शन- जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

स्वनिर्मित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है |इस मापनी में शोधकर्ता ने शिक्षण अभिवृत्ति से सम्बंधित विभिन्न कारकों से जुड़े कुल 53कथनों का समावेश किया है जो किसी भी शिक्षक की शिक्षण व्यवसाय से सम्बंधित अभिवृत्ति का सही सही मापन करते हैं |

अंकन विधि -इस मापनी में प्रत्येक कथन के सापेक्ष शोधकर्ता द्वारा पांच बिंदु मापनी स्केल का प्रयो किया गया है जिनका अंकन विधि निम्न तालिका के अनुसार है –

रेटिंग	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
अंक	5	4	3	2	1

परिकल्पना .1 संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड .प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 1: संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड .प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण :

शिक्षा का माध्यम	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मात्रा	'टी' मान	टिप्पणी	
						01.स्तर	05.स्तर
संस्थागत	200	202.92	14.043	398	3.162	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
दूरस्थ	200	198 47.	14.142				

तालिका संख्या 4.7 में संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका के अनुसार प्रथम समूह संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 202.92 तथा मानक विचलन 14.043 पाया गया है, जबकि दूसरा समूह दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 198.47 तथा मानक विचलन 14.142 पाया गया है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी-अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (C-R) की गणना की गई जिसका मान 3.162 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना संख्या 7 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 2. संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 2: संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण :

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मात्रा	'टी' मान	टिप्पणी	
						01.स्तर	05.स्तर
महिला प्रशिक्षार्थी	100	203.01	14.528	198	095.	कोई सार्थक अंतर नहीं है	कोई सार्थक अंतर नहीं है
पुरुष प्रशिक्षार्थी	100	202.82	13.614				

तालिका संख्या 4.8 में संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका के अनुसार प्रथम समूह संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 203.01 तथा मानक विचलन 14.528 पाया गया है, जबकि दूसरा समूह संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित पुरुष प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 202.82 तथा मानक विचलन 13.614 पाया गया है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी-अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (C-R) की गणना की गई जिसका मान .095 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना संख्या 8 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 3. दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 3: दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड .प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण :

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मात्रा	'टी' मान	टिप्पणी	
						01.स्तर	05.स्तर
महिला प्रशिक्षार्थी	100	199.253	14.825	198	2.621	कोई सार्थक अंतर नहीं है	सार्थक अंतर है
पुरुष प्रशिक्षार्थी	100	204.342	12.543				

तालिका संख्या 4.9 में दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका के अनुसार प्रथम समूह दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 199.283 तथा मानक विचलन 14.825 पाया गया है, जबकि दूसरा समूह दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित पुरुष प्रशिक्षार्थियों का है जिसका मध्यमान 204.342 तथा मानक विचलन 12.543 पाया गया है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी-अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (C-R) की गणना की गई जिसका मान 2.621 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना संख्या 9 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष-प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने संस्थागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से अधिक पायी गयी हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि संस्थागत शिक्षा शिक्षा की वह प्रक्रिया होती है जिसमें कोई भी विद्यार्थी प्रत्येक दिन अपने विद्यालय में निश्चित समय पर उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त करता है जबकि दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों को प्रत्येक दिन विद्यालय जाने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि सप्ताह अथवा महीने में 1 ,2 दिन के लिए अपने प्रशिक्षण संस्थान में उपस्थित होना पड़ता है। सतत रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के साथ-साथ और अनेक क्षमताओं का विकास होता है जबकि दूरस्थ

शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास भी उचित तरीके से नहीं हो पाता है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एक समान होती है। प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एक समान पायी गयी हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों को एक समान प्रशिक्षण की व्यवस्था होती है। ऐसे प्रशिक्षण संस्थान जो संस्थागत हैं वहां पर जो भी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाता है वह महिला और पुरुष दोनों प्रशिक्षणार्थियों के लिए होता है अब क्योंकि एक ही कक्षा में, एक ही शिक्षक के द्वारा, एक ही शैक्षिक वातावरण में और एक समान प्रशिक्षण महिला और पुरुष प्रशिक्षणार्थियों को दिया जाता है। इन प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास करने के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों कोसिखाया जाता है। उपरोक्त कारणों से ही संस्थागत शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एक समान पायी जाती है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर होता है अर्थात दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अलग-अलग होती है। प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से कम पायी गयी हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि महिला प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पुरुष प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण कार्य करने के लिए अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली महिलाएं अपने पारिवारिक एवं वैवाहिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपना प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं। क्योंकि महिला प्रशिक्षणार्थियों को घर की जिम्मेदारियां निभानी होती है जिस कारण से अधिकतर महिलाएं घर से बाहर निकल कर शिक्षण अभ्यास अथवा शिक्षण कार्य करने में असफल होती है। जबकि पुरुष प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अभ्यास अथवा शिक्षण कार्य करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध होते हैं। उपरोक्त कारणों से ही दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से कम पायी गयी है।

सन्दर्भ -सूची

1. अग्रवाल, एम0 (2007). सम कोरिलेट्स ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन पी-एच०डी०, लखनऊ विश्वविद्यालय पृष्ठ-59.

2. आलपोर्ट, जी0 डब्ल्यू0 एवं कन्टोल, पी0ई0 (1963). मैनुअल फार स्टडी ऑफ टीचिंग एट्टीटयूट, हार्पर एण्ड रो पब्लिकेशन, न्यूयार्क पृष्ठ 250.

3. आरिफ, एम०आई० रसिद ए० ताहिरा एस०एस० एवं अतर एम0 (2012).व्यक्तित्व और शिक्षण भावी शिक्षक व्यक्तित्व में एक जांच. International Journal of Humanities and social Science. Vol-2 No-17, Pp-16-17.

4. इंगलहर्र, मैक्स डी0 (1972). मैथड ऑफ एजूकेशन रिसर्च, रैण्ड मैकवाली एण्ड कम्पनी, शिकागो,

5. पाण्डेय रामशकलः ‘‘ शिक्षा मनोविज्ञान ’’(2007) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या - 133-136

6 गुनली, एवं कैनन (2009). तुर्की भावी शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस वॉल्यूम 4. संख्या 10. www-iiste-org

7. गुप्ता, तारकेश्वर (2014). बी0एड0 विद्यार्थियों का प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा. वर्ष 34 अंक 3. नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी. पृ. 45-54

8.गोयल, सुनिता (2013), अपने पेशे के प्रति छात्र शिक्षक का रवैया international journal of social science interdisciplinary research.

9. जमानियन एवं बहरीनी (2017) ईरानी ईएफएल शिक्षकों का उनके शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन. International Journal of Education and Psychological Research (IJEPR), Volume 3, Issue 2.

10.जहाँ, हसरत (2017) उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षको की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन. The International Journal of Indian Psychology- Volume 5, Issue 1. DIP: 18.01.080/2017050DOI: 10.25215/0501.080 http://www.ijip.in

11. कुलदीप (2018) शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की, उत्तराखंड, ISSN Print: 2394-7500 ISSN Online: 2394-5869 Impact Factor: 8.4 IJAR 2019; 5(11): www.allresearchjournal.com

12. ठौडियाल, सच्चिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द (1972) शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर.

13. तिवारी, सुनील कुमार (2002). अनौपचारिक शिक्षा के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. पीएच.डी. (शिक्षा) शोध प्रबन्ध, सी.एस. जे. एम. विश्वविद्यालय, कानपुर,

14. त्रिपाठी, विवेक नाथ और मिश्र, दुर्गेष कुमार (2021) शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला, जे. आर. एच. यूनिवर्सिटी चित्रकूट Shikshak shodh patrika vol.10(03), ISSN-0974-0562

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.